>

Title : Need to announce measures for the revival of the sagging handloom industry in the country.

श्री घनश्याम अनुरागी (जालौन): महोदय, देश में लाखों की संख्या में हथकरघा इकाईयाँ है जिनमें बुनकर और कामगार अपनी रोजी-रोटी के लिए हथकरघों पर कपड़ा बुनते हैं। उनका पूरा परिवार रंगाई, विरंजन, मर्सरीकरण, कसीदाकारी मुद्रण व्यवसाय में पीढ़ी दर पीढ़ी लगा हुआ है। आज यह व्यवसाय नगण्य एवं विलुप्त होने के कगार पर है, कारण सस्ती कीमतों पर कपास के धागों की अनुपलब्धता, सस्ती दरों पर बैंक एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा आसान उपयोग तथा कार्यशील ऋण को न दिया जाना, सरकार और उसके संगठनों द्वारा हथकरघा उत्पादों की खरीद न करना। जिससे बुनकर गले तक कर्ज में डूबते चले जा रहे है। ऐसे हजारों असहाय बुनकरों ने पहले ही अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली है तथा कई और ऐसा करने के कगार पर है। भुखमरी के कारण देश में कई बुनकरों की मौतों के समाचार प्रकाश में आये हैं जो कि निस्संदेह हमारी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था पर एक धब्बा है। इसलिए अविलम्ब उपचारात्मक उपाय किया जाना आवश्यक है।

मेरा सदन के माध्यम से केन्द्र सरकार से अनुरोध है हथकरघा बुनकरों और हथकरघा कारखानों को विलुप्त होने के बचाने के लिए सस्ती कीमतों पर कपास का धागा, बैंकों से ऋण, सरकार और उसके संगठनों द्वारा हथकरघा उत्पादों की खरीद सुनिश्चित कराने हेतु राष्ट्रीय हथकरघा बुनकर प्राधिकरण तथा हथकरघा कल्याण निधि स्थापित करने के आवश्यक कदम उठाने का कष्ट करें। जिससे बुनकर एवं उनके बच्चों का भविष्य सुधर सके। सरकारी कपड़ा मिलों में भी इनके बच्चों को 100 प्रतिशत नौकरियाँ दी जाय।

*Treated as laid on the Table